ईद और रमजान की समाप्ति

विवरण: रमजान के महीने का समापन त्योहार और उत्सव के दिन के साथ होता है, जिसमें अल्लाह का आभार व्यक्त करना, पारिवारिक बंधन, आनंद और दान के माध्यम से कम भाग्यशाली लोगों की सहायता करना शामिल है। इस पाठ मे इस दिन से संबंधित दिशा-निर्देश हैं।

द्वारा NewMuslims.com

प्रकाशित हुआ 08 Nov 2022 - अंतिम बार संशोधित 07 Nov 2022

श्रेणी: पाठ >[पूजा के कार्य](#) > [उपवास](#)

उद्देश्य

- जानना कि *⍰⍰⍰⍰ ⍰⍰-⍰⍰⍰⍰⍰⍰* क्या है
- *⍰⍰⍰⍰⍰ ⍰⍰-⍰⍰⍰⍰⍰⍰* के ज्ञान और दायित्व का एहसास करना।
- *⍰⍰⍰⍰ ⍰⍰-⍰⍰⍰⍰⍰* के बुनियादी नियमों को जानना।
- जानना कि *⍰⍰* क्या है।
- *⍰⍰⍰⍰⍰* के महत्व को समझना।
- ईद की नमाज और उत्सव के कुछ दिशानिर्देशों को समझना।

अरबी शब्द

- रमजान - इस्लामी चंद्र कैलेंडर का नौवां महीना। यह वह महीना है जिसमें अनिवार्य उपवास निर्धारित किया गया है।
- *⍰⍰⍰⍰⍰⍰* - अनुष्ठान स्नान।
- *⍰⍰* - त्योहार या उत्सव। मुसलमान दो प्रमुख धार्मिक अवकाश मनाते हैं, जिन्हें ईद-उल-फ़ित्र (जो रमजान के बाद आता है) और ईद-उल-अज़हा (जो हज के समय होता है) कहा जाता है।
- *⍰⍰ ⍰⍰-⍰⍰⍰⍰⍰* - रमजान के अंत में मुस्लिम उत्सव।
- *⍰⍰-⍰⍰-⍰⍰⍰⍰* - "बलिदान का पर्व"।
- *⍰⍰⍰⍰* - प्रार्थना की इकाई।
- *⍰⍰⍰⍰ ⍰⍰-⍰⍰⍰⍰⍰* - उपवास तोड़ने का अनिवार्य दान।

आपका इस्लामिक केंद्र रमजान की समाप्ति और ईद के जश्न की घोषणा करेगा। रमजान के महीने के बाद का पहला दिन ईद उल-फ़ित्र है, जो उपवास तोडने का उत्सव है। बहुत संभव है, रमज़ान के अंतिम कुछ दिनों में, आपकी मस्जिद भी ज़कात उल-फ़ित्र (उपवास तोड़ने का अनिवार्य दान) - गरीब मुसलमानों के लिए रमज़ान के बाद के अनिवार्य भोजन (या धन) - को इकट्ठा करना।

ज़कात उल-फ़ित्र

पैगंबर के साथियों में से एक ने कहा,

"अल्लाह के दूत ने अश्लील शब्दों या कार्यों से शुद्ध करने के लिए और जरूरतमंदों को भोजन उपलब्ध कराने के लिए उपवास रखने वालो पर ज़कात उल-फ़ित्र अनिवार्य कर दिया। यह उस व्यक्ति के लिए ज़कात है जो इसे ईद की नमाज़ से पहले देता है, लेकिन जो इसे ईद की नमाज़ के बाद देता है उसके लिए यह केवल समान्य दान है।"[1]

हम ज़कात उल-फ़ित्र के बारे में तीन बातें सीखते हैं:

(ए) यह उस व्यक्ति को शुद्ध करता है जिसने रमज़ान का उपवास किया और रमज़ान के दौरान किए गए अशोभनीय बातों और छोटे पापों से शुद्ध करता है।

(बी) यह ईद खाने-पीने का दिन है, क्योंकि इससे पहले का महीना उपवास का था। ज़कात उल-फ़ित्र यह सुनिश्चित करता है कि सबसे गरीब मुसलमान भी उत्सव के इस दिन को मनाये।

(सी) ज़कात उल-फ़ित्र देना प्रत्येक मुसलमान के लिए आवश्यक है जो खुद और परिवार के प्रत्येक सदस्य की ओर से देने में सक्षम है।

भोजन की मात्रा

प्रति व्यक्ति दिए जाने वाले भोजन की मात्रा मोटे तौर पर दोनों हाथों की चार मुट्ठी भर के बराबर होती है। अलग-अलग खाद्य पदार्थों के लिए इसकी मात्रा अलग-अलग होती है। किसी धर्मार्थ संगठन या मस्जिद को पैसे देने की अनुमति है ताकि वे खाद्य सामग्री खरीद सकें और इसे आपकी ओर से गरीबों में वितरित कर सकें, और यही कारण है कि कई मस्जिदें इसकी कीमत के बराबर धन लेती है। आप मस्जिद या धर्मार्थ संगठन को खाने का सामान दे सकते हैं, अपनी ओर से जकात उल-फ़ित्र बांटने के लिए धन दे सकते हैं या यदि आप चाहें तो स्वयं किसी को जकात उल-फ़ित्र दे सकते हैं।

भोजन के प्रकार

आपके क्षेत्र के लोगों का मुख्य भोजन दिया जा सकता है। पैगंबर के समय में खजूर, जौ, गेहूं, जैतून, किशमिश, और पनीर आमतौर पर खाया जाता था। आज पास्ता, चावल, बीन्स, आलू, पनीर और इसी तरह के अन्य खाद्य पदार्थ अधिक आम हैं।

इसे देने का सबसे अच्छा समय

इसे देने का सबसे अच्छा समय ईद की पूर्व संध्या से नमाज़ के लिए जाने से ठीक पहले है।

इसे देने का वैध समय

आप इसे ईद से एक या दो दिन पहले दे सकते हैं।

ईद की नमाज के बाद देना

ईद की नमाज के बाद देना पाप है।

इसे कसिको देना है?

यह गरीब मुस्लमि साथी को दयिा जाता है, यह जरुरी नहीं की सर्फि बहुत ही गरीब को दयिा जाये।

ईद उल-फ़ति्र

"ईद" का अर्थ है सामाजकि मेलजोल का दनि। इस्लाम में केवल तीन त्योहार हैं:

(ए) वार्षकि *[illegible]*

(बी) वार्षकि *[illegible]*

(सी) साप्ताहकि *[illegible]*।

ईद उल-फ़ति्र मुसलमानों के लिए एक प्रमुख उत्सव है, अल्लाह के प्रतिआभार व्यक्त करने का, पारविार के इकट्ठे होने का, मस्ती और ख़ुशी का समय है। इस दनि लोग एक दूसरे को बधाई देते हैं और रिश्तेदारों और दोस्तों से मलिने जाते हैं। विस्तृत व्यंजन तैयार किए जाते हैं, नए कपडे पहने जाते हैं, उपहारों का आदान-प्रदान किया जाता है और बच्चे मस्ती करते हैं।

ईद पर किए जाने वाले कुछ अनुशंसति कार्य नमि्नलखिति हैं:

ए) ईद की नमाज से पहले भोर मे गुस्ल करना या नहाना।

बी) सजना: पैगंबर ईद की नमाज में जाने के लिए अपने सबसे अच्छे कपडे पहनते थे। उनके पास एक लबादा था जसि वह विशेष रूप से दो ईद और शुक्रवार को पहनते थे।

सी) तकबीर (अल्लाह की महानता की घोषणा) कहना ईद की एक विशिष्ट विशेषता है और क़ुरआन में इसका उल्लेख है:

> **"...तथा इस बातपर अल्लाह की महमिा का वर्णन करो कि उसने तुम्हें मार्गदर्शन दयिा और (इस प्रकार) तुम उसके कृतज्ञ बन सको।" (क़ुरआन 2:185)**

कब?

ईद की तकबीर का समय उस समय से शुरू होता है जब कोई व्यक्ति अपने घर से मस्जदि की ओर जाता है। पैगंबर (उन पर अल्लाह की दया और आशीर्वाद हो) ईद के दनि अपने घर से तकबीर कहते हुए नकिलते और जब तक कि वह नमाज़ न पढ़ लेते तकबीर कहते रहते। वह नमाज के बाद तकबीर कहना बंद कर देते थे।

क्या कहना है?

तकबीर में क्या कहना चाहिए, इसके बारे में वभिनि्न प्रामाणकि कथन हैं। संक्षपि्तता के लिए, हम उस का उल्लेख कर रहे हैं जो सबसे आम है।

अल्लाहु अकबर, अल्लाहु अकबर, ला इलाहा इल्लल्लाह, वअल्लाहु अकबर, अल्लाहु अकबर, व लल्लािहलि-हम्द।[2]

ईद की नमाज

इस्लाम हमें सिखाता है कि खुशी के इन मौकों को कैसे मनाया जाए। हमें अपने दैनिक जीवन में ईश्वर के उपहारों को याद करना है; यही कारण है कि उत्सव का प्रमुख हिस्सा सार्वजनिक प्रार्थना है। ईद की नमाज़ दो रकात की होती है और इसमें कुछ अलग से जोड़ा जाता है। इमाम ईद की नमाज की विधि बताएगा। नमाज के बाद वह ईद का धर्मोपदेश देंगे, जो आमतौर पर आधे घंटे का होता है।

इसके बाद लोग एक-दूसरे को 'तकब्बल-अल्लाहु मिन्नी व मिकुम,'